वर्ष : 12 अंक : 3 जुलाई–सितम्बर 2017

पन्त प्रसार सन्देश

(प्रसार शिक्षा निदेशालय की त्रैमासिक समाचार पत्रिका)
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

संरक्षकः डा. ए.के. मिश्रा, कुलपति मुख्य सम्पादकः डा. वाई. पी. एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा
सम्पादकः ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (कृषि अभियन्त्रण) एवं डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक (सस्य)

कुलपति संदेश

'पन्त प्रसार सन्देश' पत्रिका का जुलाई–सितम्बर, 2017 (अंक 12:3) आपके हाथों में है। हमारे किसानों का अगर उन्नयन एवं विकास नहीं हुआ, खेती–बाड़ी, पशुपालन, मत्स्य पालन, वानिकी आदि अगर लाभकारी नहीं हुई तो हमें सुख शान्ति कैसे मिलेगी? यह सभी सम्भव होगा उच्चकोटि के तकनीकी विकास से, प्रक्षेत्र प्रदर्शनों से, ज्ञान एवं विज्ञान को कृषकों तक ले जाने से और कृषकों के उत्पाद को बाजार तक पहुंचाने से। प्रसंस्करण, मूल्यवर्धन, भण्डारण एवं विपणन की विभिन्न विधाओं पर हमें गहन विचार–विमर्श करना होगा। लाभकारी खेती में आने वाले अवरोधों को दूर करना होगा। इस कड़ी में विभिन्न क्षेत्र में पुरजोर प्रयास शुरू किये जा चुके हैं। अनेकानेक चीजें सतह पर उभरती नजर आ रही हैं। प्रसार शिक्षा में गतिशीलता लाने के लिए प्रसार सलाहकार समिति के माध्यम से तथा समस्त कृषि विज्ञान केन्द्रों के कार्यकलापों की समीक्षा से राज्य के किसानों के चहुँमुखी विकास की ओर कदम बढ़ाये गये हैं। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आने वाले समय में हम अपने किसान भाइयों और बहनों की बेहतर सेवा कर सकेंगे।

वैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोध निष्कर्षों को जन–जन तक पहुंचाने में प्रसार शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों जैसे प्रशिक्षणों, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों इत्यादि द्वारा प्रदेश के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में कृषक, कृषक महिलाएं एवं युवक तकनीकी अर्जित कर आजीविका एवं स्वरोजगार के क्षेत्र में आशातीत वृद्धि करने में सफल होंगे। इस पत्रिका द्वारा पन्तनगर विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा की गतिविधियों को आप तक पहुंचा कर हमें प्रसन्नता हो रही है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका प्रसार कार्यों को और अधिक गतिशील बनाने में सहभागी होगी।

शुभकामनाएँ।

(ए.के. मिश्रा)
कुलपति

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

- केन्द्र द्वारा देहरादून जनपद के विभिन्न क्षेत्रों एवं केन्द्र पर किसानों एवं कृषक महिलाओं के लिये कुल 33 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें 855 किसान लाभान्वित हुये। इन प्रशिक्षणों का आयोजन फसल उत्पादन, फसल सुरक्षा, सब्जी उत्पादन, फल उत्पादन, पोषण प्रबन्धन, मृदा परीक्षण, कुक्कुट पालन, चारा उत्पादन, पशु पालन, गृह वाटिका इत्यादि विषयों पर किया गया। इसके अतिरिक्त 06 गोष्ठी का आयोजन कर 236 किसानों एवं कृषक महिलाओं को कृषि के विभिन्न आयामों पर उनकों व्यावहारिक तकनीकी जानकारी दी गयी। प्रसार कर्मियों के लिये केन्द्र पर तीन प्रशिक्षणों का आयोजन कर 23 कार्मिकों को विभिन्न क्षेत्रों में किसानोपयोगी तकनीकों के क्रियान्वयन से हुये लाभों को साझा किया गया तथा इन तकनीकों को व्यापक स्तर पर कृषक समुदायों में प्रसारित करने की अपील की गयी। उद्यान विभाग, हिमाचल प्रदेश के 22 किसानों का पांच दिवसीय प्रशिक्षण सितम्बर 25–29,

प्रशिक्षणार्थियों को जानकारी देते हुए वैज्ञानिक

2017 में केन्द्र पर आयोजित कर सब्जी उत्पादन, मसाला उत्पादन, पोषण प्रबन्धन, फसल सुरक्षा, फल उत्पादन, मृदा परीक्षण, अन्तः फसली खेती इत्यादि विषयों पर तकनीकी जानकारी दी गयी। रेखीय विभागों के सहयोग से तीन एक्सपोजर विजिट का आयोजन केन्द्र पर किया गया, जिसमें 46 किसानों ने प्रतिभाग किया। महिला मण्डल दल की 04 बैठक आयोजित कर कुल 54 महिलाओं को पोषण प्रबन्धन से सम्बन्धित बिन्दुओं पर जानकारी दी गयी। एक पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन भी किया गया, जिसमें 22 किसानों के 72 पशुओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं तकनीकी कर्मचारियों द्वारा कुल 13 डायोग्नेस्टिक भ्रमण कर 512 किसानों की कृषि सम्बन्धी समस्या का समाधान किया गया। केन्द्र के विषय विशेषज्ञों द्वारा 154 प्रक्षेत्र भ्रमण कर 877 किसानों की कृषि एवं इससे सम्बन्धित समस्याओं का निराकरण किया गया। इसके अतिरिक्त केन्द्र पर 62 किसानों द्वारा भ्रमण किया गया, जिसमें कुल 193 किसानों को उनकी कृषि से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं के समाधान के साथ–साथ केन्द्र द्वारा किये जा रहे प्रसार कार्यों एवं अन्य कार्यक्रमों से भी उन किसानों को अवगत कराया गया।

- जनपद में दलहनी फसलों के बीजोत्पादन को प्रोत्साहन देने हेतु उड़द बीजोत्पादन के अन्तर्गत पन्त उड़द–31 का 9.90 कुन्तल प्रजनन बीज पन्तनगर विश्वविद्यालय से क्रय कर लगभग 60 है. क्षेत्रफल में आधारीय बीज उत्पादन हेतु किसानों को उपलब्ध कराया गया। यह कार्य दलहनी फसलों के अन्तर्गत केन्द्र को आवंटित सीड–हब परियोजना में किया गया। इसके अतिरिक्त फसल उत्पादन, फसल सुरक्षा, पोषण प्रबन्धन, सब्जी उत्पादन, कुक्कुट पालन, पशु पालन, गृह वाटिका विषयों पर 92 प्रदर्शनों का आयोजन 8.9 है. क्षेत्रफल में किया गया। प्रदर्शनों में किसानों को अधिक उत्पादन देने वाली प्रजातियों व संकर किस्मों, कीटों एवं बीमारियों का प्रबन्धन, संतुलित उर्वरकों का प्रयोग, नाशीजीव रसायनों का विवेकपूर्ण प्रयोग इत्यादि बिन्दुओं पर प्रदर्शनों के माध्यम से किसानों को तकनीकी जानकारी दी गयी। प्रदर्शनों के परिणामों को व्यापक स्तर पर किसान समुदायों में प्रसारित करने के लिये 04 प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें 138 किसानों ने प्रतिभाग किया। प्रक्षेत्र परीक्षण के अन्तर्गत बासमती धान की फसल में विभिन्न प्रजातियों की उत्पादन क्षमता पर आधारित एक परीक्षण का आयोजन 05 कृषक प्रक्षेत्रों पर किया गया।

प्रक्षेत्र भ्रमण करते हुए प्रशिक्षणार्थी

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अपने विषय से सम्बन्धित दूरदर्शन देहरादून को 06 टी.वी. रिकार्डिंग दी गयी। जबकि आकाशवाणी देहरादून को केन्द्र के वैज्ञानिक द्वारा एक रेडियो वार्ता दी गयी। इसके अतिरिक्त केन्द्र के विषय विशेषज्ञों द्वारा जनपद के 83 किसानों को मोबाईल फोन के माध्यम से एडवाईजरी सर्विस दी गयी। केन्द्र द्वारा आयोजित किये जा रहे विभिन्न प्रसार कार्यक्रमों एवं किसानों की कृषि सम्बन्धी समस्याओं के समाधान हेतु 09 बार विभिन्न समाचार पत्रों में तकनीकी सूचना प्रकाशित की गयी। केन्द्र द्वारा कृषि विभाग, देहरादून के सहयोग से 30 मृदा परीक्षण कर 48 किसानों को मृदा उर्वरता सम्बन्धी जानकारी एवं रिपोर्ट दी गयी।
- गृह विज्ञान वैज्ञानिक द्वारा जुलाई 11–14, 2017 तक जैन्डर फ्रेंडली टूल्स एण्ड टैक्नीक्स इन एग्रीकल्चर विषय पर चार दिवसीय प्रशिक्षण में प्रतिभाग किया गया, जिसका आयोजन प्रसार शिक्षा संस्थान, नीलोखेड़ी, हरियाणा में किया गया था।
- केन्द्र द्वारा स्तनपान जागरूकता सप्ताह का आयोजन अगस्त 01–07, 2017 तक किया गया, जिसमें 86 महिलाओं को जागरूक किया गया।
- केन्द्र द्वारा पारथेनियम जागरूकता सप्ताह का आयोजन अगस्त 16–22, 2017 तक किया गया, जिसमें 107 किसानों एवं कृषक स्नातकों को इसके उन्मूलन हेतु तकनीकी जानकारी दी गयी।
- अगस्त 26, 2017 को ग्राम–छरबा में न्यूट्रिशन गार्डन दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें 10 कृषक महिलाओं द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- न्यू इंडिया मंथन के अन्तर्गत संकल्प से सिद्धि कार्यक्रम का आयोजन संयुक्त रूप से कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी एवं भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, देहरादून द्वारा अगस्त 26, 2017 को किसान भवन, देहरादून में किया गया, जिसमें जनपद के विभिन्न विकास खण्डों के 320 किसानों द्वारा प्रतिभाग किया गया। कार्यक्रम का आयोजन महामहिम राज्यपाल, मुख्य अतिथि तथा माननीय कृषि मंत्री की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास भी उपस्थित थे।

संकल्प से सिद्धि कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए राज्यपाल डा. के.के. पॉल

- केन्द्र द्वारा राष्ट्रीय पोषण जागरूकता सप्ताह का आयोजन सितम्बर 01–07, 2017 तक किया गया, जिसमें 91 महिलाओं को पोषण सुरक्षा के विभिन्न विषयों पर जागरूक किया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिक द्वारा सितम्बर 20, 2017 को जलागम निदेशालय, देहरादून में आयोजित जलवायु परिवर्तन कार्यशाला में प्रतिभाग करते हुये बदलते परिवेश में सब्जी उत्पादन के व्यावसायीकरण विषय पर प्रस्तुतिकरण दिया गया। इस कार्यशाला में विश्व बैंक के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कुल 12 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें जनपद के 213 किसानों को कृषि एवं सम्बन्धित विषयों पर तकनीकी रूप से सुदृढ़ किया गया।
- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों में 117 तथा प्रक्षेत्र परीक्षणों में 30 प्रक्षेत्रों पर कृषि, मृदा, कीट और गृह विज्ञान विषयक प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया।
- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में स्तनपान सप्ताह आयोजित किया गया। इसके अन्तर्गत ग्रामीण महिलाओं को शिशुओं को कम से कम छः माह तक स्तनपान अवश्य कराने हेतु जागरूक किया

स्तनपान सप्ताह का आयोजन

गया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्राम जस्सावाला, धनौरा और दौलतपुर में महिलाओं में जागरूकता कार्यक्रम किये गये। इसमें लगभग 150 महिलाओं ने प्रतिभाग किया।

- केन्द्र के तत्वाधान में अगस्त 19, 2017 को विश्व मधुमक्खी दिवस का आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत जनपद के मौनपालकों हेतु 'मौनगृहों के मौसमी प्रबन्धन' विषयक एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। साथ ही मौनपालन में आने वाली समस्याओं और नये रोजगार के अवसर पर विचार–विमर्श भी किया गया। मौनपालन के विकास में कृषक उत्पादक संघों की महत्ता पर भी जोर दिया गया।
- केन्द्र द्वारा सितम्बर 01, 2017 को 'संकल्प से सिद्धि' कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें स्वामी यतीश्वरानन्द, विधायक–हरिद्वार (ग्रामीण) मुख्य अतिथि रहे। साथ ही श्री देशराज कर्णवाल, विधायक–झबरेड़ा एवं श्री सुरेश राठौर, विधायक– ज्वालापुर विशिष्ठ अतिथि रहे। कार्यक्रम में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास एवं विभिन्न रेखीय विभागों के जिला स्तरीय अधिकारियों सहित कुल 70 कर्मचारियों ने भाग लिया। जनपद के विभिन्न ग्रामों से लगभग 700 कृषकों ने इस कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी के द्वारा वर्ष 2022 तक कृषकों की आय दोगुनी करने की शपथ ली गई। इस अवसर पर सभी रेखीय विभागों तथा कृषि विज्ञान केन्द्र ने अपने द्वारा दी जा रही सुविधाओं एवं चलाये जा रहे कार्यक्रमों को परिलक्षित करती प्रदर्शनी भी लगायी।

संकल्प से सिद्धि–न्यू इंडिया मंथन कार्यक्रम का आयोजन

- केन्द्र द्वारा सितम्बर 01–07, 2017 तक राष्ट्रीय पोषण सप्ताह का आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत प्रदर्शनी, व्याख्यान, परिचर्चा एवं प्रशिक्षण के माध्यम से ग्रामीणों एवं स्कूली बच्चों में पोषण तथा उचित आहार के महत्व की जागरूकता की गई। साथ ही कॉलेज के छात्र–छात्राओं को भी स्वस्थ रहने में उचित पोषण के महत्व की जानकारी दी गई।
- केन्द्र के तत्वाधान में सितम्बर 09, 2017 को सतग्राम संकुल क्लस्टर के गांवों में कृषि के विकास के मुद्दों पर चर्चा हेतु एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता डा. ए.के. सिंह, उपमहानिदेशक (कृषि प्रसार), आई.सी.ए.आर., नई दिल्ली द्वारा की गई। इस अवसर पर डा. राजवीर सिंह, निदेशक, अटारी–लुधियाना एवं श्री आलोक गुप्ता, सदस्य गवर्निंग बाडी, आई.सी.ए.आर., नई दिल्ली विशिष्ठ अतिथि रहे। कार्यशाला में कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी के वैज्ञानिकों के साथ–साथ आई.आई.एस.आर.–लखनऊ, आई.आई.वी.आर.–वाराणसी, सीकैट–लुधियाना, एन.डी.आर.आई.–करनाल, आई.ए.आर.आई.–नई दिल्ली, आई.आई.एफ.एस.आर.–मोदीपुरम, आई.आई.टी.–दिल्ली, सी.आई.एस.डब्ल्यू.सी.–देहरादून तथा देव संस्कृति विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने भाग लिया। कार्यशाला में जनपद के मुख्य कृषि अधिकारी, मुख्य पशुचिकित्साधिकारी तथा मुख्य उद्यान अधिकारी भी उपस्थित रहें। इस अवसर पर केन्द्र के प्रभारी अधिकारी द्वारा क्लस्टर के विकास के लिये कार्ययोजना का प्रस्तुतिकरण किया गया और उस पर चर्चा की गई।

कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए डा. ए.के. सिंह, उपमहानिदेशक (कृषि प्रसार)

- केन्द्र द्वारा सितम्बर 15 से अक्टूबर 02, 2017 तक 'स्वच्छता ही सेवा' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत स्वच्छता कार्यक्रमों को गांवों में, सार्वजनिक स्थानों पर, पर्यटन स्थल पर, स्कूल–कॉलेज तथा कार्यालय परिसर में चलाया गया। इस उपलक्ष्य में एक कार्यशाला का परिसर पर आयोजन भी किया गया। कॉलेज के छात्र–छात्राओं में स्वच्छता की अलख जगाने हेतु व्याख्यान दिया गया तथा एक निबन्ध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में 14.23 है. क्षेत्रफल पर 162 कृषकों के खेत पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों एवं अनुकरणीय प्रदर्शन का आयोजन किया जा रहा है। केन्द्र के वैज्ञानिक समय–समय पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का भ्रमण कर कृषकों को आवश्यक कार्य करने हेतु जानकारी प्रदान करते है एवं कृषक की समस्याओं का समाधान भी मौके पर कर रहे है।
- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में 20 प्रशिक्षण, जिसमें कृषक, ग्रामीण युवाओ एवं प्रसार कार्यकर्ताओ हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें 355 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास मे 47 कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण किया गया, जिसमें 459 कृषकों को आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराई गयी एवं समस्याओं का निराकरण भी किया गया।
- विगत त्रैमास में विभिन्न स्थानीय एवं राज्य स्तरीय समाचार पत्रों पर 02 कृषि कार्यो की न्यूज प्रकाशित की गई। केन्द्र द्वारा विभिन्न फसलों पर 02 प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें 45 कृषकों एवं रेखीय विभागों के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा प्रतिभाग किया गया तथा कृषकों को नई तकनीक के बारे में विस्तार से बताया गया।
- केन्द्र द्वारा अगस्त 01–07, 2017 को स्तनपान सप्ताह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 40 कृषक महिला एवं 02 महिला प्रसार कार्यकर्ताओं द्वारा प्रतिभाग किया गया। इस कार्यक्रम में गांव स्तर एवं केन्द्र पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।
- केन्द्र द्वारा विश्व मधुमक्खी दिवस अगस्त 19, 2017 का आयोजन किया गया। इस अवसर पर केन्द्र के प्रभारी अधिकारी डा. आर.के. शर्मा ने उपस्थित कृषक बन्धुओं का स्वागत करते हुए मधुमक्खी पालन के महत्व एवं उपयोगिता पर प्रकाश डाला। तथा मधुमक्खी पालन के द्वारा कृषक जहाँ एक ओर शहद उत्पादन से अपनी आय में वृद्वि कर सकते है साथ ही फल एवं सब्जी की उत्पादकता में भी यह एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इस अवसर पर लगभग 50 किसानों एवं कृषक महिलाओं ने प्रतिभाग किया।
- केन्द्र के तत्वाधान में सितम्बर 02, 2017 को न्यू इंडिया मंथन के अन्तर्गत संकल्प से सिद्वि (2017–2022) विषय पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि, श्री अजय टम्टा,

संकल्प से सिद्धि कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मा. राज्यमंत्री

मा. केन्द्रीय कपड़ा राज्य मंत्री, भारत सरकार ने 2022 तक कृषकों की आय दोगुनी करने हेतु कृषकों से आधुनिक कृषि एवं कृषि की उन्नत तकनीक अपनाकर पैदावार बढ़ाने की सलाह दी। आपने बेमौसमी सब्जी उत्पादन, टपक एवं स्प्रिंकलर सिंचाई, वर्षा जल संरक्षण जैसी तकनीक को विशेष रूप से अपनाने पर बल दिया। आपने कहा कि कृषि आय दोगुनी करने हेतु सरकार किसानों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर सदैव खड़ी रहेगी। इस अवसर पर आपने उपस्थित जन समूह से वर्ष 2022 तक कृषक आय दोगुना एवं नये भारत का निमार्ण संबंधी शपथ भी दिलवायी। विशिष्ठ अतिथि श्री रघुनाथ सिंह चौहान विधायक अल्मोड़ा एवं उपाध्यक्ष–उत्तराखण्ड विधानसभा ने कृषकों से मृदा स्वास्थ्य कार्ड, किसान क्रैडिट कार्ड बनवाकर इससे लाभ लेने हेतु आह्वान किया। आपने विशेषकर कम लागत से पैदा होने वाली दलहन जैसे गहत, मटर, मसूर इत्यादि की खेती करने की सलाह दी। कार्यक्रम में कृषि, उद्यान, मत्स्य विभाग, पशुपालन, रेशम एवं कृषि विज्ञान केन्द द्वारा स्टाल भी लगाया गया। इस अवसर पर रेखीय विभाग के अधिकारी/कर्मचारी सहित 281 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

- सितम्बर 15 से अक्टूबर 02, 2017 तक स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत सेवा दिवस, समग्र स्वच्छता दिवस, सर्वत्र स्वच्छता दिवस एवं नजदीक के पर्यटक स्थल सूर्य मन्दिर कटारमल में विशेष रूप से कार्यक्रम किये गये।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैंना एंचोली (पिथौरागढ़)

- विगत त्रैमास में केन्द्र पर 10 तथा केन्द्र से बाहर 11 प्रशिक्षण सम्पन्न किए गये, जिसमें क्रमशः 208 (पुरूष 75 एवं 133 महिला) एवं 226 (पुरूष 119 एवं 107 महिला) कृषक लाभान्वित हुए तथा ग्रामीण युवाओं को केन्द्र पर 02 प्रशिक्षण दिये गये, जिसमें क्रमशः 20 (पुरूष 09 एवं 11 महिला) कृषक लाभान्वित हुए।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत् त्रैमास में कृषकों के प्रक्षेत्र पर 89 भ्रमण किए गये, जिसके द्वारा 680 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र पर जानकारियाँ प्राप्त करने हेतु 528 किसानों द्वारा 130 भ्रमण किये गये और केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अपनी समस्याओं का समाधान एवं कृषि उत्पादन की नवीनतम जानकारी प्राप्त की। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 02 रेडियों वार्ता दिए गए और प्रचार–प्रसार हेतु दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला व दैनिक जागरण में 08 तकनीकी समाचारों को प्रकाशित किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र, पिथौरागढ़ द्वारा कुल 02 प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। इस प्रक्षेत्र दिवस पर कुल 49 कृषकों ने भाग लिया। केन्द्र के वैज्ञानिकों के द्वारा 17 गोष्ठियों का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 368 किसान लाभान्वित हुए।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन में धान–2.0 है., धान बासमती, 1.0 है., धान हाइब्रिड 0.5 है., मक्का 0.5 है., मंडुआ 1.0 है., सोयाबीन–4.0 है., अरहर 1.0, गहत 0.5 है., शिमला मिर्च 0.5 है., टमाटर 0.5 है., पत्तागोभी 0.5 है., फ्रांसबीन 0.5 है. तथा अन्य सब्जियों को लगाया गया।
- केन्द्र के गैना एवं ऐंचोली प्रक्षेत्र पर संचालित विभिन्न परियोजनाओं के अंतर्गत् फल एवं सब्जी पौध उत्पादन हेतु 03 पॉलीहाउस एवं 01 शेडनेट में उन्नतशील प्रजातियों के सब्जी–फल पौध उगाकर कृषकों को पत्तागोभी, टमाटर, शिमला मिर्च, प्याज के 15,000 पौध एवं स्ट्राबेरी के 7350 पौध कृषकों को विक्रय किए गए है।
- अगस्त 01–07, 2017 तक केन्द्र द्वारा "स्तनपान सप्ताह" का आयोजन किया गया। इस स्तनपान सप्ताह में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा नवजात शिशुओं के मानसिक एवं शारीरिक विकास के लिए मॉ के दूध की महत्ता के बारे में माताओं को जानकारी उपलब्ध करायी गयी। मॉ का दूध नवजात शिशु की रोग प्रतिरोधी क्षमता बढ़ाने में बहुत ही कारगर है। इसके अतिरिक्त बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास हेतु जिन तत्वों की आवश्यकता होती है वह मॉ के दूध में प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। अतः मॉ के दूध को बच्चों को पिलाना अति आवश्यक है। इस कार्यक्रम में ऐंचोली, किरगॉव एवं गैना की लगभग 25 माताओं ने अपने नवजात शिशुओं के साथ इस कार्यक्रम में प्रतिभाग किया।
- कृषकों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से "विश्व मधुमक्खी दिवस" का आयोजन अगस्त 19, 2017 को ग्राम–खड़किनी में किया गया। इस अवसर पर एक किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें 28 किसानों ने भाग लिया।
- भारत सरकार के द्वारा कृषकों की आय वर्ष 2022 तक दो गुनी करने के उद्देश्य से चलाये जा रहे कार्यक्रम न्यू इंडिया मंथन "संकल्प से सिद्धि" कार्यक्रम का आयोजन अगस्त 27, 2017 को पिथौरागढ़ जिले के विकासखण्ड–मूनाकोट के ग्राम–डाबरी में आयोजित किया गया, जिसमें 457 कृषक लाभान्वित हुए।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अगस्त 16–22, 2017 तक पार्थीनियम (गाजर घास नियंत्रण) सप्ताह का आयोजन किया गया। इस जागरूकता सप्ताह में ग्राम–झूलाघाट, मर्सोली, डुंगरी और केवीके, पिथौरागढ़ में पार्थीनियम के नियंत्रण सम्बन्धित जागरूकता अभियान कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा सितम्बर 01–07, 2017 तक "राष्ट्रीय पोषण सप्ताह" का अयोजन किया गया। इस सप्ताह में विभिन्न आंगनबाड़ी केन्द्रों एवं महिला समूहों पर इस विषय पर जानकारी व जागरूकता अभियान कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों के द्वारा सितम्बर 15 से अक्टूबर 02, 2017 के मध्य जिले के 10 गॉवों में "स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम" के अन्तर्गत क्रमशः सितम्बर 17, 2017 को सेवा दिवस में जिले के 3 ग्रामों में 12 व्यक्तियों, सितम्बर 24, 2017 को समग्र स्वच्छता दिवस में जिले के 3 ग्रामों में 14 व्यक्तियों, सितम्बर 25, 2017 को सर्वत्र स्वच्छ दिवस में तीन ग्रामों के 16 व्यक्तियों एवं अक्टूबर 01, 2017 को पर्यटन स्थल के आस पास सफाई कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 11 व्यक्तियों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वादम (चमोली)

- केन्द्र द्वारा सितम्बर 10, 2017 को केन्द्र परिसर में ''संकल्प से सिद्धि'' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन स्थानीय विधायक श्री मगन लाल साह जी द्वारा किया गया। उक्त कार्यक्रम में विभिन्न ग्रामों के 119 कृषको ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में कृषकों द्वारा कृषि एवं जानवरों द्वारा उनके फसल को निरन्तर पहुचाये जा रहे नुकसान सम्बन्धी समस्यायें रखी गयी। कार्यक्रम में उपस्थित कृषि विभाग एवं पशु चिकित्सा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने–अपने विभाग से कृषक हित में चलायी जा रही योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी गयी, इसके साथ ही साथ कार्यक्रम में उपस्थित जनप्रतिनिधियों द्वारा भी कृषकों को सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनओं से अवगत कराकर इन योजनाओ का लाभ उठाने को प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में उद्यान विभाग द्वारा स्टॉल के माध्यम से कृषकों को बीज एवं सूक्ष्म कृषि औजार उपलब्ध कराये गये एवं केन्द्र के सभी वैज्ञानिको द्वारा कृषकों को सम्बोधित किया गया तथा चलचित्र व प्रसार साहित्य उपलब्ध कराकर विधायक महोदय द्वारा संकल्प दिलाया गया। कार्यक्रम में विधायक महोदय के अतिरिक्त श्री राकेश जोशी, ब्लॉक प्रमुख, थराली; श्रीमती भावना

संकल्प से सिद्धि कार्यक्रम के दौरान उपस्थित अतिथिगण

रावत, जिला पंचायत सदस्य; श्री हरीश चन्द्र जोशी, ग्राम प्रधान–ग्वालदम, डा. दीपक मेहरा, पशुचिकित्साधिकारी, थराली; श्री डी.पी. सिंह, भूमि संरक्षण अधिकारी, थराली एवं स्थानीय उद्यान, मौनपालन, पशुपालन के अधिकारी/कर्मचारियों द्वारा भी प्रतिभाग किया गया।

- केन्द्र द्वारा सितम्बर 24, 2017 को ग्राम–बिजार, विकास खण्ड–घाट (चमोली) में समग्र स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत ग्राम–बिजार में ग्राम प्रधान, ग्राम उप प्रधान, स्वयं सहायता समूह के सदस्यों की उपस्थिति में ग्रामीणों को समग्र स्वच्छता दिवस के अन्तर्गत स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने के लिए जानकारी दी गई, जिसमें अपने आस–पास साफ–सफाई रखने व स्वच्छता की महत्ता से अवगत कराया गया। उक्त कार्यक्रम में 36 कृषकों एवं ग्रामीणों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- केन्द्र द्वारा स्वच्छता ही सेवा कैम्पेन के अन्तर्गत सितम्बर 25, 2017 को प्राथमिक विद्यालय, चायखाना–ग्वालदम (सार्वजनिक स्थल) में सर्वत्र स्वच्छता दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यालय के छात्रों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया तथा केन्द्र पर उपस्थित समस्त वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों द्वारा विद्यालय परिसर की सफाई का कार्य भी किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत)

- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा फसल उत्पादन, मृदा परीक्षण, नाशी जीव प्रबन्धन, संग्रथित मत्स्य पालन, पशु पालन एवं महिलाओं व बच्चों में संतुलित आहार विषय पर कुल 20 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 404 कृषकों ने कृषि सम्बन्धी नवीनतम तकनीकी जानकारी प्राप्त की।
- रोजगारपरक प्रशिक्षण के अन्तर्गत मधुमक्खी पालन तथा मशरूम उत्पादन विषय पर चार दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें कुल 40 कृषकों ने भाग लिया।
- केन्द्र द्वारा माह अगस्त में संग्रथित मत्स्य पालन पर 10 प्रदर्शन लगाये गये। प्रदर्शन के अन्तर्गत उन्नत प्रजाति की मत्स्य अंगुलिकायें कृषकों के तालाबों में संचित कराई गई। इसके अतिरिक्त केन्द्र के मत्स्य पालन प्रदर्शन तालाबों में जाल चलाकर मछलियों की वृद्धि का भी आकलन किया गया।

तालाब में मत्स्य अंगुलिकाये संचित कराते हुए वैज्ञानिक

- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा ग्राम डोबाभागू, डुगरी फर्त्याल, कलचौडा, तोली व तल्ला बापरू में पोषण वाटिका प्रबन्धन, सोयाबीन पी.एस. 1092, धान एन.डी. आर. 359, धान पी.डी. 11 के प्रजातीय प्रदर्शन तथा रामदाना में पर्ण जालक कीट का प्रबन्धन विषय पर कुल 5 प्रक्षेत्र दिवसों का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 167 कृषकों ने भाग लिया।
- केन्द्र की गृह विज्ञान इकाई द्वारा अगस्त 04, 2017 को स्तनपान दिवस का आयोजन कर महिलाओं को स्तनपान से होने वाले लाभ से अवगत कराया गया, जिसमें कुल 18 महिलाओं ने प्रतिभाग किया।
- सुई बिशुंग के आषाडी वायुरथ महोत्सव में केन्द्र द्वारा अगस्त 04–06, 2017 तक कृषि प्रदर्शनी लगाकर 500 कृषकों को खेती के प्रति जागरूक किया गया तथा उनकी कृषि सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण किया गया।
- कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अगस्त 19, 2017 को विश्व मधुमक्खी दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया। इसके परिपेक्ष में केन्द्र द्वारा कृषकों में मधुमक्खियों के संरक्षण एवं जैव विविधता के प्रति जागरूक करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम ग्राम डुँगरी फर्त्याल में आयोजित किया गया, जिसमें केन्द्र के सह निदेशक पौध सुरक्षा डा. एम.पी. सिंह द्वारा मधुमक्खी पालन की विधिवत जानकारी कृषकों को दी। इस कार्यक्रम में बायफ संस्था, खेतीखान के डा. दिनेश रतूडी ने संस्था द्वारा संचालित योजनाओं पर प्रकाश डाला। उपरोक्त कार्यक्रम में कुल 38 कृषकों ने प्रतिभाग किया।
- केन्द्र द्वारा सितम्बर 01–07, 2017 तक ग्राम सुई, कोली ढेक, त्यारसौं, तथा केन्द्र पर राष्ट्रीय पोषण सप्ताह का आयोजन किया गया, जिसमें आंगनवाडी कार्यकत्ताओं सहित कुल 178 महिलाओं ने भाग लिया। इस दौरान पोषण से सम्बन्धित विषयों पर प्रसार साहित्य के अन्तर्गत कुल 120 फोल्डर, प्रपत्र व हैन्डआउट तैयार कर आंगनबाडी केन्द्रों में वितरित किये गये।
- केन्द्र द्वारा सितम्बर 11, 2017 को माननीय प्रधानमंत्री जी की महत्वाकांक्षी परियोजना संकल्प से सिद्धिः न्यू इंडिया मंथन (2017–2022) कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय विधायक श्री पूरन सिंह फर्त्याल द्वारा किया गया, जिसमें पूर्व विधायक श्री के.सी. पुनेठा एवं राष्ट्रीय सहकारी बैंक के निदेशक हयात सिंह मेहरा तथा कृषि एवं सम्बन्धित जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ–साथ जनपद के विभिन्न ग्रामों से लगभग 300 कृषक/कृषक महिलाओं द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- केन्द्र द्वारा स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत सितम्बर 24–25, 2017 को ग्राम मंगोली व थुआ मेहरा में जागरूकता कार्यक्रम चलाया गया, जिसमें कुल 178 महिलाओं व पुरूषों ने प्रतिभाग किया।
- केन्द्र पर शिमला मिर्च की अंजलि प्रजाति का मूल्यांकन किया गया, जिसमें 200 वर्ग मी. पालीहाउस में 490 किग्रा. शिमला मिर्च का उत्पादन लिया गया।

पॉलीहाउस में शिमला मिर्च का उत्पादन

- केन्द्र द्वारा माह सितम्बर, 2017 में फूलगोभी की स्नोमिस्टिक, स्नोक्राउन, स्नो व्हाइट तथा पत्ता गोभी की टी–621 एवं वरूण प्रजाति की कुल 8000 पौध तैयार कर कृषकों की उपलब्ध कराई गई।
- किसानों की आय दोगुनी करने हेतु निदेशक शोध, पन्तनगर के निर्देशन में जनपद चम्पावत की कार्य योजना पूर्ण कर ली गयी है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में केन्द्र पर एवं केन्द्र के बाहर कुल 09 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिसमें 189 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम कृषकों, ग्रामीण युवक–युवतियों एवं प्रसार कार्यकत्ताओं हेतु आयोजित किये गये। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम साफ–सफाई के महत्व, खाद्य के मूल्यवर्धन, सोयाबीन प्रसंस्करण मूल्यवर्धन, मत्स्य प्रसंस्करण, मत्स्य बीज परिवहन तकनीकी, महिलाओं एवं बच्चो की देखभाल, राइजोबियम कल्चर द्वारा उर्द बीज उपचार आदि विषयों पर आयोजित किये गये।
- विगत त्रैमास में प्रथम पंक्ति प्रदर्शन एवं कल्सटर प्रदर्शनों के अर्न्तगत कुल 04 प्रकार के प्रदर्शन पोषण वाटिका, सोया आधारित मूल्यविर्धत पदार्थ, उर्द पी.यू. –31, मत्स्य की नवीन प्रजातियों पर विभिन्न ग्रामों में आयोजित किये गए, जिसमें 67 कृषक/कृषक महिलाए लाभान्वित हुए। पौष्टिक आटे पर आयोजित

10 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन का अवलोकन कर ग्राम बन्नाखेड़ा की महिलाओं को लाभान्वित किया गया।

- अन्य प्रसार गतिविधियों के अर्न्तगत वैज्ञानिकों द्वारा 52 बार 204 कृषको के यहाँ प्रक्षेत्र भ्रमण किया गया, केन्द पर 01 एक्सपोजर विजिट विद्यार्थियो हेतु, 09 किसान गोष्ठी जिसमें 250 कृषको ने प्रतिभाग किया, 02 सारांश प्रकाशित हुए तथा 10 बार समाचार पत्रों में न्यूज प्रकाशित हुई।
- केन्द्र के फसलोत्पादन के वैज्ञानिक डा. सी. तिवारी एवं गृह वैज्ञानिक डा. प्रतिभा सिंह द्वारा सितम्बर 14–15, 2017 तक पन्तनगर में आयोजित नेशनल सिम्पोजियम में प्रतिभाग किया गया तथा 02 शोध पत्र प्रस्तुत किये गए।
- केन्द्र द्वारा 03 जागरुकता सप्ताह आयोजित किये गये। अगस्त 01–07, 2017 तक स्तनपान सप्ताह हेतु ग्रामीण महिलाओं के बीच जागरुकता बढ़ाई गई। अगस्त 16–22, 2017 तक पारथेनियम जागरुकता सप्ताह के अर्न्तगम ग्राम

राष्ट्रीय पोषण सप्ताह का आयोजन

जैतपुर के शिशु मंदिर के विद्यार्थियों के बीच जानकारी प्रदान की गई तथा सितम्बर 01–07, 2017 में विभिन्न दिवसों में राष्ट्रीय पोषण सप्ताह आयोजित किया गया और महिलाओं को कम लागत से बनने वाले पौष्टिक व्यन्जनों की जानकारी प्रदान की गई एवं पोषण के महत्व से अवगत कराया तथा दैनिक आहार में संतुलित भोजन करने पर जोर दिया।

- केन्द्र द्वारा सितम्बर 11, 2017 को कृषि उत्पादन मण्डी समिति, नानकमत्ता में संकल्प से सिद्धि कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य अतिथि माननीय विद्यायक डा. प्रेम सिंह राना जी द्वारा किसानों की आय दुगनी करने के उद्देश्य से और स्वच्छ भारत अभियान का संकल्प दिलवाया, जिसमें लगभग 500 कृषको ने प्रतिभाग किया।

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) द्वारा विगत त्रैमास में राज्य के प्रगतिशील कृषक, कृषक सलाहकार समिति (एफ.ए.सी.), विकास खण्ड स्तरीय तकनीकी दल (बी.टी.टी.), ब्लाक तकनीकी प्रबन्धक (बी.टी.एम.), फार्म स्कूल संचालक, पशुपालन विभाग के कर्मचारी एवं अधिकारी, उर्वरक डीलर एवं उद्यान विभाग के प्रसार कर्मियों हेतु 'फसल सुरक्षा प्रबन्धन (रबी)', 'फसल एवं सब्जियों की जैविक खेती', 'मुर्गी पालन–एक लाभकारी व्यवसाय', 'संरक्षित सब्जी उत्पादन', 'फल एवं सब्जी प्रसंस्करण– एक लाभकारी व्यवसाय', 'दुग्ध उत्पादन एवं दुधारू पशुओं का प्रबन्धन', 'मृदा उर्वरता प्रबन्धन एवं स्वास्थ्य हेल्थ कार्ड' एवं 'फल वृक्षों में समन्वित कीट एवं रोग प्रबन्धन' विषयक 08 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा कुल 176 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (मृदा एवं जल संरक्षण अभियांत्रिकी) एवं डा. बी.वी. सिंह, वरिष्ठ तकनीकी सहायक द्वारा किया गया।

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/भ्रमण

प्रसार शिक्षा निदेशालय की प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा विगत त्रैमास में विभिन्न सरकारी विभागों, स्वयं–सेवी संस्थाओं, निजी एवं सार्वजनिक फर्मों तथा परियोजनाओं द्वारा प्रायोजित कुल 17 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। आयोजित किये गये यह प्रशिक्षण कृषि तकनीकी, रोजगारपरक मशरूम उत्पादन, पशुपालन, एग्रो फॉरेस्ट्री, सब्जी उत्पादन, कृषि विविधीकरण, कृषि की उन्नत तकनीकी एवं जैविक खेती से सम्बन्धित थे। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों से 400 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। अधिकांश प्रशिक्षण तीन दिवसीय से लेकर पांच दिवसीय थे। प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम का संचालन प्राध्यापक एवं प्रभारी प्रशिक्षण डा. एस.के. बंसल द्वारा किया गया।

एकल खिड़की पद्धति से कृषक सेवा

प्रसार शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत कार्यरत कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) द्वारा विगत त्रैमास में पन्तनगर कृषक हेल्पलाईन (05944–234810, 05944–235580) एवं किसान कॉल सेन्टर (1800–180–1551 टोल फ्री) के माध्यम से कुल 597 प्रश्न किसानों द्वारा पूछे गये, जिनका समाधान सम्बन्धित विषय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। देश एवं प्रदेश के विभिन्न स्थानों से आये 1149 कृषकों ने एटिक पर भ्रमण किया एवं किसानों द्वारा एटिक से कुल रू. 56,503 के साहित्य एवं रू. 1,14,400 के धान्य फसलों, दलहनी, तिलहनी, मोटा अनाज एवं सब्जियों के बीजों का क्रय किया गया। एटिक की गतिविधियों का संचालन डा. राम जी मौर्य, प्राध्यापक (सस्य)/प्रभारी अधिकारी एटिक के मार्गदर्शन में किया गया।

आगामी त्रैमास में कृषकों हेतु महत्वपूर्ण बिन्दु

कृषि हेतु–

- पुष्प गुच्छ रोग की रोकथाम हेतु अक्टूबर माह में आम के बाग में नैथलीन एसिटिक एसिड (200 पीपीएम) का छिड़काव करें एवं नवम्बर माह में मीली बग से बचाने के लिए वृक्षों पर पालीथीन की 30 से.मी. चौड़ी पट्टी गोलाई में बांधकर दोनों सिरों पर ग्रीस लगायें तथा प्रति वृक्ष थालों एवं तनों पर क्लोरोपाइरीफॉस 5 प्रतिशत धूल की 200–250 ग्रा. मात्रा का बुरकाव करें।
- आलू, मूली, गाजर, शलजम, लहसुन की बोआई अक्टूबर माह में करें।
- असिंचित क्षेत्रों में चना, मटर, मसूर की बोआई अक्टूबर माह के तृतीय सप्ताह तक एवं सिंचित क्षेत्रों में नवम्बर के प्रथम पखवाड़े तक तथा पर्वतीय क्षेत्रों में अक्टूबर से मध्य नवम्बर तक अवश्य कर लें।
- आडू, आलूबुखारा एवं खुबानी में जड़ छेदक कीट की रोकथाम हेतु क्लोरोपाइरीफॉस (4 मि.ली./10 लीटर पानी में) का घोल बनाकर थालों में सिंचाई करें।
- पर्वतीय क्षेत्रों में अक्टूबर के मध्य से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक मसूर की बोआई करें।
- मैदानी एवं निचले पर्वतीय असिंचित क्षेत्र में गेहूं की बोआई अक्टूबर के द्वितीय पखवाड़ें में एवं ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों में अक्टूबर के प्रथम सप्ताह तथा सिंचित क्षेत्रों में नवम्बर में करें।
- अक्टूबर माह में नींबू वर्गीय फल, आंवला, करौदा, कटहल, अमरूद, नाशपाती में रस्ट की रोकथाम हेतु ब्लाइटाक्स 50 (0.25 प्रतिशत) का छिड़काव करें।
- राई एवं सरसों की बोआई अक्टूबर के प्रथम पखवाड़े तक अवश्य पूरा कर लें।

पशुपालन एवं अन्य हेतु–

- मत्स्य तालाब में अक्टूबर/नवम्बर माह में खाद व उर्वरक का प्रयोग करें। मछलियों को पर्याप्त मात्रा में परिपूरक आहार दें। अवांछनीय जलीय जीव जन्तुओं को निकालते रहें।
- पशुओं को चर्मरोग से बचाने हेतु सूखे खुरारे का प्रयोग करें।
- मुर्गी घरों के बिछावन को दिन में 2–3 बार पलटते रहें ताकि वह सूखता रहे।
- मुर्गियों से अधिक अण्डा प्राप्त करने हेतु दिन और रात की कुल रोशनी 16 घण्टे बनाएं रखें। जैसे–जैसे दिन छोटे होते जाएं रात की रोशनी बढ़ाते जाएं।
- पशुओं के छोटे बच्चों को कृमि रहित करने हेतु पिपराजीन या अन्य दवा चिकित्सक की परामर्श अनुसार दें।

- माह नवम्बर एवं दिसम्बर में पशुओं को ठण्ड से बचाव हेतु पशुशाला पर पर्दे लगायें। अक्टूबर एवं नवम्बर माह में भैंस गरमी में आती है अतः ध्यान दें। गाभिन भैंसों को अधिक खनिज लवण दें।

निदेशक प्रसार शिक्षा डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा विभिन्न वाह्य आयोजनों/बैठकों में प्रतिभाग

- अगस्त 21, 2017 को राष्ट्रीय सलाहकार एन.एफ.एम.एस., डा. विरेन्द्र सिंह पाहिल के साथ कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर) एवं अगस्त 22, 2017 को कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल) का भ्रमण किया गया।
- अगस्त 25, 2017 को देहरादून में सचिव कृषि उत्तराखण्ड की अध्यक्षता में आहूत बैठक में प्रतिभाग किया गया।
- अगस्त 26, 2017 को देहरादून में आयोजित 'संकल्प से सिद्धि' कार्यक्रम में प्रतिभाग किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि माननीय राज्यपाल उत्तराखण्ड, डा. के.के. पॉल द्वारा किया गया। इस अवसर पर माननीय कृषि मंत्री उत्तराखण्ड, श्री सुबोध उनियाल भी उपस्थित थे।
- सितम्बर 01, 2017 को कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार) में आयोजित 'न्यू इण्डिया मंथन– संकल्प से सिद्धि' कार्यक्रम में प्रतिभाग किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री यतीश्वरानन्द, विधायक–हरिद्वार ग्रामीण द्वारा किया गया।
- सितम्बर 08, 2017 को सचिव कृषि उत्तराखण्ड की अध्यक्षता में किसानों की आय दोगुनी करने के सम्बन्ध में देहरादून में आहूत बैठक में प्रतिभाग किया गया।

निदेशक की कलम से

क्षे भारत का सत्ताइसवां राज्य उत्तराखण्ड प्राकृतिक वन सम्पदा की दृष्टि से एक धनी राज्य है, यहाँ की दो तिहाई आबादी कृषि पर आधारित है। राज्य में लगभग 12.50 प्रतिशत कृषि भूमि है, जिसका फैलाव ऊँची पहाडियों से लेकर भावर, तराई के मैदानी क्षेत्रो तक है। आज के परिपेक्ष्य को देखते हुए यह निश्चित है कि कृषि जोत का आकार प्रतिदिन कम होता जा रहा है। अतः कृषि के लिए सीमित भू–भाग में बेहतर उत्पादन के लिए लाभकारी कृषि उत्पादों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

उत्तराखण्ड की पहाडियों और कुमाऊँ के तराई क्षेत्रों में लगभग 33 वनस्पति प्रजातियां ऐसी हैं, जिनके रेशों को वस्त्र निर्माण एवं अन्य प्रयोगों में लाया जा सकता है। इन कृषि आधारित रेशों में भांग (केनाबिस सेटाइवा), जगंली भिण्डी (हिविसकस फेक्यूलेन्स), रामबांस (अगेव अमेरीकाना) और मूर्वा (सेन्सिवेरिया झइफेसिएटा) आदि कुछ प्रमुख है। कृषि आधारित रेशों का वस्त्र उद्योग में प्रयोग बहुत पुराने समय से होता चला आ रहा है, लोग आज भी पुराने तरीके से पेड़–पौधों से रेशा निकाल रहे हैं। इन रेशों के प्रक्रमण, मूल्यवर्धन व बाजारी भाव के ज्ञान के आभाव से इस तरह के कार्यो से प्राप्त लाभ न के बराबर है। इसलिए नई पीढ़ी इसे नहीं अपना रही है। परिणाम स्वरूप यह उद्यम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने में असमर्थ है।

सम्पूर्ण विश्व में पर्यावरण के लिए सुरक्षित वस्तुओं की मांग बढ़ रही है, आज के फैशन जागरूक उपभोक्ता के बीच में प्राकृतिक रूप से बने वस्त्रों/उत्पादों की बहुत मांग है। विदेशी प्राकृतिक रूप से तैयार उत्पादों को अधिक कीमत पर भी खरीदने को तैयार रहते हैं। इसे देखते हुए यह निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि यदि कृषि आधारित वस्तुओं का मूल्यवर्धन करके प्राकृतिक वस्त्र, कई सजावटी वस्तुए जैसे बैग, पर्स, मैट्स, वॉल हैंगिंग, डलिया, टोकरी, पेन होल्डर, हैट, दरी, चटाई इत्यादि बनाई जाए तो निश्चित ही उनसे अच्छी मात्रा में लाभ अर्जन किया जा सकता है। इसके साथ ही तीव्रता से बढ़ती जनसंख्या की बढ़ती मांग के साथ हम केवल सूती, रेशमी, ऊनी वस्त्रों के स्रोत पर ही निर्भर नहीं रह सकते हैं। हमें वस्त्रों के अपारम्परिक स्रोतों की ओर ध्यान देना भी आवश्यक है। इनका उपयोग हमारी वस्त्र सम्बन्धी मांगों को तो पूरा करेगा ही, साथ ही यह लोगो को रोजगार दिलाने में तथा राष्ट्रीय आय को बढ़ाने में अपना बहुमूल्य योगदान देगा। इसके रेशों से बने कपड़ों की मांग को बढ़ावा देकर हम कृत्रिम धागो से होने वाले पर्यावरण प्रदूषण की समस्या को भी कम करेंगे। उत्तराखण्ड जैसे पर्वतीय क्षेत्र में जहाँ बड़े कल–कारखाने स्थापित नहीं किए जा सकते हैं, वहाँ इन स्थानीय रेशों पर आधारित कुटीर उद्योग लोगों को रोजगार दिलाने का एक बेहतर माध्यम है। यह उद्योग कृषि आधारित है। इसे कृषक महिलाएं समूह बनाकर व्यवसाय के रूप में अपनाकर धनोपार्जन करके अपने परिवार का जीवन स्तर सुधार सकती हैं।

हस्तशिल्पियों को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा जगह–जगह सरस मार्केट भी बनाएं जा रहे हैं। किसान मेले, प्रगति मैदान में आयोजित ट्रेड फेयर, दिल्ली हाट आदि कई ऐसे स्थान है, जहाँ विदेशी भ्रमण करते हैं जो कि प्राकृतिक उत्पादों को अधिक कीमत पर भी खरीदने को तैयार रहते हैं। इस प्रकार प्राकृतिक रेशो से बनी वस्तुओं को जिसमें की शुरूआती लागत कम होती है व उचित मूल्यवर्धन द्वारा लाभ अधिक कमाया जा सकता है।

उत्तराखण्ड देश का पहला ऐसा पर्वतीय राज्य है जहाँ बाँस एवं रेशा विकास परिषद का गठन किया गया है। केन्द्र सरकार के कपड़ा मंत्रालय द्वारा भी प्राकृतिक रेशों के लिए कई राष्ट्रीय नीतियां बनाएं जाने का प्रावधान है, जिसमें की इन उत्पादों की डिजाइनिंग को बेहतर करके उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने हेतु प्रोफेशनल डिजाइनरों को भी रखा जा रहा है व 'उत्तराखण्ड हथकरघा हस्तशिल्प विकास परिषद' का गठन किया गया है। इन रेशों से तैयार उत्पादों की गुणवत्ता निश्चित करके उन्हें इनकी हिमाद्रि नाम से ब्राडिंग की जा रही है, व देहरादून में सिल्क पार्क की स्थापना की गई है। सरकार द्वारा कार्यशाला, कान्फ्रेंस आदि में प्रयुक्त स्टेशनरी, फाइल फोल्डर इत्यादि के लिए प्राकृतिक रेशे व अन्य कुटीर उद्योगों द्वारा निर्मित सामग्री को प्राथमिकता दी जा रही है।

विश्वविद्यालय स्तर पर राज्य के 09 जनपदों में कार्यरत कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्रदेश के सुदूर पर्वतीय क्षेत्रों में रेशों को प्राप्त करने वाली पौधों की प्रमुख प्रजातियों के गुणवत्तायुक्त उत्पादन की उन्नत तकनीकियों से कृषकों को अवगत कराया जा सकता है।

प्रसार शिक्षा निदेशालय की प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई, कृषि प्रौद्योगिक सूचना केन्द्र एवं प्रसार शिक्षा निदेशालय में स्थापित राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) भी इस तकनीकी हस्तानान्तरण में प्रसार कर्मियों/कृषकों/कृषक महिलाओं/ग्रामीण युवक युवतियों में क्षमता व कौशल का निर्माण करने में अपना बहुमूल्य योगदान दे सकता है। उत्तराखण्ड की प्राकृतिक सम्पदा को वस्त्र उद्योग में प्रयोग में लाकर किसान, प्रदेश की कृषि को नई दिशा दे सकते हैं। समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा सीमान्त वर्ग के किसानों मुख्यतः युवा वर्ग को कृषि विविधीकरण विषयक पर आयोजित प्रशिक्षण में इन रेशों के बारे में सम्बन्ध वैज्ञानिकों द्वारा प्रशिक्षण दिए जा चुके हैं। प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित किए जाने वाले विभिन्न प्रदर्शनियों, किसान मेलों आदि में इन कृषि आधारित इन रेशों से वन उत्पादों की प्रदर्शनी का स्टॉल लगाकर उपभोक्ताओं को इनके प्रति जागरूक करना होगा, व किसानों को भी इन से होने वाली आय के बारे में ज्ञान होगा।

मुझे यह बताते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है कि अब विश्व की सबसे कीमती मूंगा रेशम उत्पादन में उत्तराखण्ड का भी नाम जुड़ गया है। अभी तक पूरे विश्व में मूंगा रेशम उत्पादन देश के उत्तर–पूर्वी राज्य ही करते थे, लेकिन उत्तराखण्ड उत्तर भारत का पहला राज्य होगा, जहाँ मूंगा रेशम के साथ ही अन्य सभी प्रकार के रेशम का उत्पादन शुरू हो गया है। सर्वे में यह पाया गया है कि बागेश्वर जिले के कपकोट क्षेत्र में मूंगा रेशम उत्पादक कीट (एन्थीरिया असमा) के लिए पोषक पादप (लिटसिया पोलियंथा) प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, वहीं ऊंचाई वाले भाग में पोषक पादप (पर्सिया बांबी) भी पर्याप्त मात्रा में है। किसानों को इसके उत्पादन सम्बन्धित तकनीकी जानकारी प्रदान की जा रही है।

(वाई0पी0एस0 डबास)

सम्पर्क सूत्र :– डा0 वाई0पी0एस0 डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा, गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड), ☎ 05944–233336 (कार्यालय), 233664 (निवास), Email-dee_gbpuat@rediffmail.com

विश्वविद्यालय हेल्प लाइन दूरभाष सं0 05944–234810, किसान कॉल सेन्टर निःशुल्क दूरभाष सं0 1800–180–1551

दृश्य यात्रा

कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं भ्रमण कार्यक्रमों की झलकियाँ

मुद्रक : विश्वविद्यालय मुद्रणालय, पन्तनगर